REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2024

पंजाब में अनुसूचित जाति के लिए कल्याणकारी योजनाओं में मीडिया की भूमिका

अमनदीप कौर
सहायक प्रोफेसर लोक प्रशासन विभाग, यूनिवर्सिटी कॉलेज घुद्दा, बठिंडा।

सारांश

जैसे-जैसे हम 21वीं सदी में पहुँचते हैं, विज्ञान , प्रौद्योगिकी और औद्योगीकरण के युग में, क्रांति, डिजिटलीकरण ने हर क्षेत्र में विकास ने जबरदस्त प्रगति की है| जनता तक पहुंचने, जागरूकता फैलाने और प्रोत्साहन देने के तरीकों में अंततः बदलाव आया है। लोगों के कल्याण और कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए कई सरकारी नीतियां हैं| समाज का वंचित वर्ग के लिए सरकार राज्य और केंद्र स्तर पर भी इन समुदायों को उनकी आर्थिकी मदद के लिए अवसर प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं | जैसे, गरीबी एवं स्वास्थ्य समस्या को दूर कर विकास एवं विकास संचार हेतु उनके आवासों के अलगाव को दूर करना । पंजाब 33% से अधिक अनुसूचित जाति जनसंख्या वाला राज्य है| यह शोध पत्र पंजाब में अनुसूचित जाति विभिन्न सामाजिक विश्लेषणों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है कि , मीडिया स्रोत विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के प्रचार को कैसे प्रभावित करते हैं| प्रस्तुत पेपर प्राथमिक और साथ ही द्वितीयक स्रोत पर आधारित है| इसके अलावा, शोध पत्र इसकी एक तस्वीर प्रदान करता है कि कल्याणकारी योजनाओं को बढ़ावा देने में रेडियो और प्रिंट मीडिया द्वारा क्या भूमिका निभाई गई है| शोध पत्रअनुसूचित जाति की आबादी के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, धारणा, जागरूकता और सामाजिक आर्थिक स्थितियों के साथ समाप्त होता है।

मुख्य शब्द: जागरूकता, मीडिया, धारणा, अनुसूचित जाति और कल्याण योजनाएं।

परिचय

किसी भी विकासशील देश या अर्थव्यवस्था के लिए सबसे बड़ी चिंताओं में से महिलाओं और बच्चों के हाशिए पर मौजूद और वंचित वर्गों का उत्थान हमेशा से रहा है| कोई भी विकासशील देश यदि महिलाओं और बच्चों के एक बड़े वर्ग की बुनियादी ज़रूरतें पूरी नहीं हुईं तो देश समृद्ध नहीं हो सकता। पर्याप्त रूप से, पर्याप्त मानकों को पूरा करना होता है | इसलिए यह किसी (देश) के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है कि, सरकार समाज में इन वर्गों की स्थिति को मजबूत करने और उनकी स्थिति सुनिश्चित करने के लिए सशक्तिकरण करे| वर्तमान भारत ने सोशल मीडिया पर बड़ा ट्रैफ़िक उत्पन्न किया है। भारत फेसबुक पर और व्हाट्सएप प्लेटफॉर्म पर यह दुनिया भर में सबसे ज्यादा ट्रैफिक उत्पन्न करता है, जबकि यूट्यूब दूसरे नंबर पर है| साल 2020 तक 50% आबादी सोशल

मीडिया का इस्तेमाल कर रही थी, और उनमें लगभग 40% महिला उपयोगकर्ता थीं। यह भी अनुमान है कि 2025 तक सामाजिक भारत में मीडिया उपयोगकर्ताओं की संख्या बढ़कर 67% हो जाएगी।

भारत में वंचित लोगों, विशेष रूप से जनजाति और उन जातियों और वर्गों की जिन्हें जन्म की दुर्घटना के कारण मृत्यु दर में गिरावट दर्जा की गयी है | जो लोकतंत्र के लिए प्रतिबद्ध किसी भी सरकार का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। 1947 में भारत की आजादी के बाद, भारत सरकार ने महसूस किया कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ी जातियों जैसे दलित वर्गों को आरक्षण प्रदान करने और अनुसूचित जाति ,अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ी जातियों के लाभ के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को लागू करने जैसे विभिन्न तरीकों से समर्थन देने की तत्काल आवश्यकता है। सरकार की एक मानक नीति रही है जिसका उद्देश्य अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को सामान्य आबादी के बराबर लाना है। वर्तमान समय में वंचितों के कल्याण और कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए कई सरकारी नीतियां हैं |

"कल्याण" शब्द अब इतने सारे और अलग-अलग संयोजनों में शामिल हो गया है, कि शायद ही कोई इसके अर्थ के बारे में सोचता है। हालाँकि, कल्याणकारी राज्यों या, उस मामले के लिए, सार्वजनिक, राजकोषीय, कार्य-संबंधी कल्याण और समाज के कुल कल्याण का विश्लेषण करने के लिए, यह स्पष्ट होना महत्वपूर्ण है कि कल्याण क्या है क्योंकि कल्याणकारी राज्य क्या है, इसकी हमारी समझ के लिए यह परिणाम है। कल्याण को कैसे मापा जा सकता है। पुरे देश में तुलना या विकास करते समय यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।[1]

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार

दास और दस्यु कोई आदिम लोग नहीं थे। वे आर्यों की तरह ही सभ्य थे और वास्तव में आर्यों से अधिक शक्तिशाली थे। दास और दस्यु एक नहीं थे। यह कोरी कल्पना थी। ये नाम बाद के वैदिक साहित्य से पूरी [1]तरह गायब हो गए। इसका मतलब था कि वे पूरी तरह से वैदिक आर्यों में समाहित हो गये थे। प्रारंभिक वैदिक साहित्य शूद्रों के बारे में मौन था। लेकिन उत्तर वैदिक साहित्य इनसे भरा पड़ा है। अम्बेडकर ने निष्कर्ष निकाला कि शूद्र दस्युओं और दासों से भिन्न थे

अनुसूचित जाति कौन हैं ?

शूद्र और अवर्ण वर्ण के लोगों में कई जातियाँ शामिल हैं, ऐसे समूह जिन्होंने युगों से सामाजिक और आर्थिक अन्याय सहा है। इन भारत में अछूत जातियों को 1932 में आधिकारिक तौर पर दलित जातियों के रूप में परिभाषित किया गया था। गांधी उन्हें हरिजन नाम दिया गया जहां "हरि" का अर्थ भगवान है, "जन" का अर्थ लोग हैं और इस प्रकार "हरिजन" मतलब भगवान के लोग. अछूतों द्वारा हरिजन नाम न केवल नापसंद किया गया बल्कि नफरत और विरोध किया गया . बम्बई विधान सभा में हरिजन शब्द।ये एक जंगली सूखा, एक कार्निवल और बिल का उपयोग करने का कड़ा विरोध था इसे विधिवत अनुसूचित जातियाँ शब्द द्वारा प्रतिस्थापित किया गया 1938 में अनुसूचित जातियाँ आज भी इसे अभिलेख और परिपत्र में सरकार द्वारा अनुसूचित जाति के रूप में उपयोग किया जाता रहा| जब 1931 भारत की जनगणना में जातियों को व्यवस्थित रूप से सूचीबद्ध किया गया| अनुसूचित जाति शब्द पहली बार इन जातियों पर लागू किया गया था| 1935 का भारत सरकार अधिनियम तक वे वर्ग या बाहरी जातियाँ,अछूत,या दलित कहे जाते थे, भारत सरकार ने अनुसूचित जातियों की एक सूची प्रकाशित की, भारत सरकार के आदेश 1936 के तहत संविधान के लागू होने के साथ भारत, अनुसूचित जातियों ने कुछ आवश्यक अधिकार और लाभ ग्रहण किए हैं।

[1] http://www.shareyouressays.com (12 नवंबर 2017 को एक्सेस किया गया)

लेख के अंतर्गत भारत के संविधान की धारा 341(1) भारत के राष्ट्रपति, राज्यपाल से परामर्श के बाद, "जातियों, नस्लों, जनजातियों या जातियों या नस्लों, जनजातियों के भीतर समूहों के कुछ हिस्सों" को निर्दिष्ट कर सकता है| संविधान के प्रयोजन के लिए अनुसूचित जाति माना जाएगा"। तथापि, अधिनियम 341 (2) बी के अनुसार, भारत की संसद कानून द्वारा उपरोक्त को शामिल या बाहर कर सकती है |

अनुसूचित जातियों की सूची से समूहों का उल्लेख किया गया है। | प्रत्येक राज्य के लिए अलग से अधिसूचितऐसी अनुसूचित जातियां हो सकती हैं । अनुसूचित जातियाँ सामाजिक रूप से पिछड़ी हुई हैं | आर्थिक रूप से इसलिए संविधान उन्हें विशेष सुरक्षा देता है. संविधान के अनुच्छेद 46 के अंतर्गत कमजोर वर्ग के लोगों की शिक्षा और आर्थिक हितों की रक्षा करना और सभी प्रकार के शोषण से विशेष देखभाल के साथ प्रचार करना' राज्य की जिम्मेदारी है| यहाँ तक कि शूद्रों को भी उपनयन, विद्या, हथियार रखना, व्यापार और अन्य "स्वच्छ" व्यवसाय से जिससे उन्हें बाहर कर दिया गया था[2]

विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म

सोशल मीडिया अभियान संदेश का परीक्षण करने के लिए एक उत्कृष्ट स्थान है। यह वायरल होने और यह देखने का भी एक अवसर है कि उस दौरान क्या ट्रेंडिंग और नवीनतम अपडेट हैं और अपनी प्रासंगिकता को भी मापें। अब राजनेता, यहां तक कि हर कोई खुद को पहलों और रुझानों के साथ जोड़ने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर रहा है। इससे पहले उन्हें पारंपरिक मीडिया जैसे टेलीविजन और स्लॉट, समाचार पत्र और घर-घर जाने का उपयोग करना पड़ता था। यह ऊंची लागत थी और इसका प्रभाव अथाह था। समाचार पत्र, सोशल वेबसाइट, सरकारी वेबसाइट, फेसबुक, व्हाट्सएप, यूट्यूब, विभिन्न समाचार चैनल और पंचायत स्तर पर सामान्य सेवा केंद्र जैसे विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है । वे घटकों के साथ संवाद कर रहे है , अभियान चला रहे है , जागरूकता पैदा कर रहे है , घटकों के साथ संवाद करने और जुड़ने से विश्वसनीयता और विश्वास स्थापित करने और बनाने में भी मदद मिलेगी जिससे सिस्टम में पारदर्शिता और जवाबदेही आएगी। कोविड-19 महामारी के समय में, सरकार ने ग्रामीण आबादी के जीवन को बचाने के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू की गयी । टेलीविजन की मदद से, विभिन्न सामान्य सेवा केंद्र, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और विभिन्न मोबाइल एप्लिकेशन देश की पूरी आबादी की मदद के लिए विभिन्न योजनाओं को बढ़ावा देते हैं।

पंजाब में अनुसूचित जाति के लिए कल्याणकारी योजनाएं

1. पंजाब आशीर्वाद योजना 2013
2. पंजाब बिजनेस ब्लास्टर युवा उद्यमी योजना 2023
3. पंजाब मुफ्त बिजली योजना 2023
4. खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए ओलंपियन बलबीर सिं हवरिष्ठ छात्रवृत्ति योजना 2023
5. पंजाब डोरस्टेप राशन डिलीवरी योजना 2023
6. पंजाब सरकार मुफ्त स्कूल वर्दी योजना 2023
7. पंजाब दिव्यांगजन शक्तिकरण योजना 2023
8. पंजाब शहरी आवास योजना 2023

[2] एन.डी. कांबले, द शेड्यूल्ड कास्ट, आशीष पब्लिशिं गहाउस, एच-12, नई दिल्ली, (1982), पी.30

संबंधित अध्ययन की समीक्षा

नायडू (2004) ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश नमूना एससी निरक्षर हैं साक्षरों में से अधिकांश के पास न्यूनतम शैक्षिक उपलब्धि है। आगे यह भी पाया गया है कि सर्वत्र अनुसूचित जाति की तीनों पीढ़ियों में निरक्षरता अधिक है। हालाँकि, पीढ़ी दर पीढ़ी निरक्षरता में गिरावट आई है, खासकर चौथी पीढ़ी के मामले में, उत्तरदाताओं के बच्चों में। शैक्षिक गतिशीलता के संबंध में यह पाया गया है कि गतिहीनता की तुलना में अधिक स्पष्ट है| गतिशीलता, गतिहीन की, बहुसंख्यक निरक्षर है। गतिशीलता के मामले में, पर्याप्त बहुमत ने सभी मामलों में ऊपर की ओर गतिशीलता दिखाई है। नगण्य के मामले को छोड़कर पिता और प्रतिवादी पीढ़ियों के बीच गतिशीलता, नीचे की ओर गतिशीलता बहुत है (नगण्य). उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि उनके नमूना क्षेत्र की अनुसूचित जाति की स्थिति बदल रही है सकारात्मक रूप से शहरीकरण, आर्थिक जैसी परस्पर पूरक सहायक शक्तियों के कारण विकास एवं प्रगतिशील विधान.[3]

ठाकुर (2020) अपने शोध पत्र में विभिन्न सामाजिक विश्लेषणों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करते हैं| मीडिया स्रोत यह समझने के लिए कि वे विभिन्न सरकारी नीतियों के प्रचार को कैसे प्रभावित करते हैं| इस शोध पत्र की संरचना इस तरह से की गई है कि शुरुआत में यह सरकारी नीतियों को प्रभावित करने में सिनेमा की भूमिका का विश्लेषण करता है| जिसका अनुसरण किया जाता है, कि टेलीविजन विज्ञापनों की भूमिका की व्याख्या, क्योंकि वे नीतियों को सामने लाते हैं, जैसे आम जनता को सूचना देना आदि | इसके अलावा, शोध पत्र भूमिकाओं का चित्रण प्रदान करता है कि, सरकारी नीतियों को बढ़ावा देने में रेडियो और प्रिंट मीडिया द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है। शोध पत्र है यह कानून के संबंध में समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के साथ निष्कर्ष निकालता है ।[4]

मित्तल (2022) इस पेपर में, हम तीन कारकों के बीच बातचीत की सावधानीपूर्वक जांच करते हैं: ग्रामीण रोजगार गारंटी पर एक सामाजिक कल्याण योजना का भारत में प्रदर्शन (प्राप्त) आधिकारिक रिकॉर्ड से, बड़े पैमाने पर इन कारकों के कवरेज की मात्रा और भावना मीडिया (छह अंग्रेजी राष्ट्रीय समाचार पत्रों के समाचार लेखों के विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त), और विभिन्न राज्यों में केंद्र के साथ राज्य सरकारों के बीच राजनीतिक तालमेल सरकार (चुनाव डेटा से प्राप्त)। हम इन तीन डेटासेट की एक समय श्रृंखला बनाते हैं| 2014 से 2021 तक, और दिखाएँ (ए) कल्याण योजना के विभिन्न प्रदर्शन कारक कैसे हैं अलग-अलग राज्यों में मीडिया द्वारा अलग-अलग व्यवहार किया जाता है, जो इस आधार पर होता है कि वे केंद्र सरकार के साथ हैं या गुटनिरपेक्ष हैं, और (बी) क्या मीडिया में कवरेज करने में सक्षम है| कल्याण योजना के प्रदर्शन को प्रभावित करें| हमारी सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार, यह है मीडिया पूर्वाग्रह, सरकारी प्रदर्शन के बीच अंतरसंबंध की जांच करने वाला अपनी तरह का पहला अध्ययन और सरकारी प्रभाव, और इनकी जटिलताओं और बारीकियों को उजागर करने में मदद करता है|[5]

रौनकी राम (2016) बताते हैं कि दलित चेतना का जन्म बीसवीं सदी की शुरुआत में दलितों के लिए न्याय और समानता की मांग के लिए हुआ था। यह कभी भी दलितों का विशेष क्षेत्र नहीं रहा। बीच-बीच में उन्हें गैर-दलित इलाकों से भी इनपुट मिलते रहे. वह आगे कहते हैं कि दलित अपनी ही दलित चेतना के शिकार बन गये। इसके बावजूद, जाति और जाति-आधारित पदानुक्रमों को पार करते हुए, जाति की पहचान को मजबूत किया गया। अभी हाल तक उनकी निचली जाति की स्थिति के कारण उन्हें अछूत

---

[3] नायडू, आर.वी.के., अनुसूचित जाति का सशक्तिकरण, कल्पाज़ प्रकाशन, दिल्ली, 2004।

[4] ठाकुर (2020) सरकारी नीतियों को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया की भूमिका। अंतरराष्ट्रीय कानून प्रबंधन और मानविकी जर्नल. खंड 3 अंक 6; 632.

[5] मित्तल (2022)। भारत में सामाजिक कल्याण योजनाओं के प्रदर्शन की निगरानी और प्रभावित करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका। दिशा सूचक यंत्र। सिएटल. यु. इस.

कहकर निंदित किया जाता है ; अब वे यह हो गए हैं कि संविधान निचली जाति के लोगों को विभिन्न सुविधाएं प्रदान करता है। वह आगे बताते हैं कि आद धर्म आंदोलन ने सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया के माध्यम से अनुसूचित जातियों को सामाजिक मान्यता प्राप्त करने में मदद की। लेकिन दूसरी ओर उन्होंने नई पहचान में आध्यात्मिक उत्थान भी शामिल किया और उसे एक नया नाम दिया, आदि -धर्म | आदि - धर्म आंदोलन मंगू राम के नेतृत्व में पहला आदि -धर्म आंदोलन पंजाब के दोआबा क्षेत्र के उत्पीड़ित लोगों में चेतना जगाने में सफल रहा।[6]

उद्देश्य

1. सोशल मीडिया में अनुसूचित जाति की कल्याण योजनाओं की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना प्रसंग।
2. विभिन्न सामाजिक कार्यों के संबंध में अनुसूचित जाति के लोगों की धारणाओं का अध्ययन करना पंजाब में मीडिया.

क्रियाविधि

डेटा प्राथमिक और द्वितीयक तरीकों से एकत्र किया गया है। माध्यमिक स्रोतों में प्रकाशित पुस्तकें, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और ऑनलाइन सूचना रिपोर्ट शामिल हैं, अप्रकाशित कार्यालय अभिलेख. प्राथमिक डेटा पंजाब की अनुसूचित जाति की आबादी से एकत्र किया गया है। डेटा एकत्र करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियाँ अवलोकन, साक्षात्कार और प्रश्नावली हैं। यादृच्छिक राज्य में रहने वाली अनुसूचित जाति की आबादी से 100 लोगों का नमूना एकत्र किया गया था | पंजाब तहसील कल्याण कार्यालय के अधिकारियों से भी बातचीत की गई।

जाँच - परिणाम

तालिका 1. आपको कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी कहाँ से मिली?

सूचना का स्रोत	ग्राहकों की संख्या	ग्राहकों का प्रतिशत
समाचार पत्र	10	10%
टेलीविजन	25	25%
कोई भी सरकारी कर्मचारी	20	20%
मित्र/रिश्तेदार	15	15%
कोई अन्य सामाजिक मिडिया	30	30%
कुल	100	100%

सूचना स्रोत वह व्यक्ति, वस्तु या स्थान है जहाँ से सूचना आती है, उत्पन्न होती है, या प्राप्त की जाती है। वह स्रोत किसी व्यक्ति को किसी चीज़ के बारे में सूचित कर सकता है या उसके बारे में ज्ञान प्रदान कर सकता है। तालिका 1. शोधकर्ता से पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (30%) को किसी अन्य सोशल मीडिया के माध्यम से सूचना मिली थी | (25%) लोगों को टेलीविजन के माध्यम से सूचना मिली थी |(20%) को किसी भी सरकारी कर्मचारी के द्वारा सूचित किया गया था, (15%) को

[6] रौनकी राम, "अस्पृश्यता, दलित चेतना और पंजाब में आद धर्म आंदोलन", दलित पर रीडिंग आइडेंटिटी (ईडी), स्वराज बसु, ओरिएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2016

रिश्तेदारों/दोस्तों से किसी भी तरह की जानकारी दी गई थी (10%) लाभार्थियों को किसी भी समाचार पत्र के माध्यम से सूचना मिली थी|

तालिका 2. क्या आप इस विशेष योजना के लाभ जानते हैं ?

योजनाओं	ग्राहकों की संख्या	ग्राहकों का प्रतिशत
पंजाब आशीर्वाद योजना 2013	100	100%
पंजाब बिजनेस ब्लास्टर युवा उद्यमी योजना 2023	10	10%
पंजाब मुफ्त बिजली योजना 2023	100	100%
ओलंपियन बलबीर सिंह सीनियर छात्रवृत्ति योजना 2023 तक खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करें	10	10%
पंजाब डोरस्टेप राशन डिलीवरी योजना 2023	80	80%
पंजाब सरकार मुफ्त स्कूल समान योजना 2023	85	85%
पंजाब दिव्यांगजन शक्तिकरण योजना 2023	20	20%
पंजाब शहरी आवास योजना 2023	12	12%

भारत सरकार के मंत्रालय विभिन्न समय - समय पर उपयोगी योजनाएं लेकर आए हैं। तालिका संख्या 2 में प्रस्तुत तिथि से यह पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (100%) पंजाब आशीर्वाद योजना, (100%) पंजाब मुफ्त बिजली योजना, (85%) पंजाब सरकार मुफ्त स्कूल वर्दी योजना, (80%) पंजाब डोरस्टेप राशन वितरण योजना, (20%) पंजाब शहरी आवास योजना, (12%) पंजाब दिव्यांगजन शक्तिकरण योजना, (10%) पंजाब बिजनेस ब्लास्टर युवा उद्यमी योजना, (10%) खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए ओलंपियन बलबीर सिंह वरिष्ठ छात्रवृत्ति योजना।

तालिका 3. कल्याणकारी योजना की प्राप्ति के लिए मीडिया प्लेटफॉर्म के बारे में आपकी क्या राय है?

गुण	ग्राहकों की संख्या	ग्राहकों का प्रतिशत
संतोषजनक	54	54%
संतोषजनक नहीं	46	46%
कुल	100	100%

डेटा तालिका संख्या 3 से पता चलता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (46%) ने बताया कि वे सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से असंतुष्ट थे|

चर्चा एवं विश्लेषण

सरकार ने पंजाब राज्य में अनुसूचित जाति आबादी के लिए कुछ अच्छी कल्याणकारी योजनाएं शुरू की हैं। पंजाब एक कृषि प्रधान राज्य है और 33% लोग अनुसूचित जाति के हैं। लेकिन योजनाओं और कानूनों से अधिक, सामाजिक चर्चा, बहस, प्रचार और जागरूकता ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर संबंधित समस्याओं से निपटने के लिए ध्यान देने की आवश्यकता है। जिस दिन ये योजनाएं और कार्यक्रम हमारे देश के कोने-कोने तक पहुंच जाएंगे, उस दिन हमारा विकासशील देश एक विकसित और समृद्ध राष्ट्र के रूप में उभरेगा। सरकार ने अनुसूचित जाति की आबादी के लिए कई योजनाएं बनाई हैं, लेकिन ग्रामीण और पिछड़े इलाकों के लोग ऐसी सभी योजनाओं में से केवल दो या तीन योजनाओं के बारे में ही जानते हैं। इसलिए, आउटरीच को बढ़ावा देने की अत्यधिक आवश्यकता है। बदलाव के लिए खुलापन होना चाहिए और न केवल महिलाओं बल्कि पुरुषों को भी शिक्षित करने की इच्छा होनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि समाज पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान अधिकारों और अवसरों को अपनाने के लिए तैयार है। इस डिजिटल दुनिया में समाज को शिक्षित, जागरूक और संवेदनशील बनाना समय की मांग है।

निष्कर्ष

ऐसी योजनाओं के प्रसार को बढ़ावा देने की बहुत आवश्यकता है और मीडिया इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। मीडिया का उपयोग इस मुद्दे के बारे में जागरूकता बढ़ाने और कार्यकर्ताओं और सरकारों को कार्यक्रम लागू करने में मदद करने के लिए एक उपकरण के रूप में किया जा सकता है। इसी तरह कल्याणकारी योजनाओं को पिछड़ी जातियों तक पहुंचाने में मदद मिल सकती है क्योंकि आज के दौर में सोशल मीडिया एक बहुत ही महत्वपूर्ण उपकरण है। निष्कर्ष में, यह शोध यह निष्कर्ष निकालता है कि सरकार सोशल मीडिया का अधिकतम उपयोग कर सकती है। कल्याणकारी योजनाओं को अनुसूचित जाति के लोगों तक बढ़ाया जा सकता है, ताकि इन कल्याणकारी योजनाओं के पीछे के दर्शन को लागू करके अनुसूचित जाति के लोगों को समाज की बुनियादी विकास धारा में एकीकृत किया जा सके।

संदर्भ

1. http://www.shareyouressays.com (12 नवंबर 2017 को एक्सेस किया गया)
2. एन.डी. कांबले, द शेड्यूल्ड कास्ट, आशीष पब्लिशिंग हाउस, एच-12, नई दिल्ली, (1982), पी.30
3. जोशी (2017) भारत में महिला एवं बाल कल्याण योजनाएं और मीडिया कैसे प्रचार कर सकता है आउटरीच. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट इनोवेशन रिसर्च, वॉल्यूम 3, अंक 12, पृष्ठ 947-954.
4. मित्तल (2022) प्रदर्शन की निगरानी और उसे प्रभावित करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका भारत में सामाजिक कल्याण योजनाएं। दिशा सूचक यंत्र। सिएटल. यू. एस
5. ठाकुर (2020) सरकारी नीतियों को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया की भूमिका। अंतरराष्ट्रीय कानून प्रबंधन और मानविकी जर्नल. खंड 3 अंक 6; 632.
6. रोनकी राम, "अस्पृश्यता, दलित चेतना और आद धर्म आंदोलन पंजाब", रीडिंग्स ऑन दलित आइडेंटिटी (ईडी), स्वराज बसु, ओरिएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2016

समाचार पत्र:

दैनिक अजीत

हिंदुस्तानटाइम्स

जग बानी

इंडियन एक्सप्रेस
भारत का समय
द ट्रिब्यून

वेबसाइटें:

www.welfarepunjab.gov.in

https://timesofindia.indiatimes.com
www.post.jagran.com
http://www.punjab.gov.in
www.mygovernment.com
http://www.punjab.gov.in
http://socialjustic.nic.in
https://www.google.co.in
www.minorityaffairs.gov
http://punjabscholarship.gov.in.
http://socialjustice.nic.in
http://punjab.gov.in